"आर्त शांति: फला विद्या "

क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल , देहरादून

अंक 2 : अक्टूबर , 2023

सम्पादिका की कलम से...

प्रिय पाठकगण,

'साहित्य' एक व्यापक और महती अवधारणा है जो एक आलोक के समान समाज को प्रकाशित करता आया है। यह एक शब्द सम्पूर्ण जगत का ज्ञान रखता है और संसार को प्रेरित करता है। मैं समझती हूँ कि संस्कृति, भाषा और साहित्य एक दूसरे के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकते। संस्कृति आधार है तो भाषा,संस्कृति और साहित्य का माध्यम है और साहित्य की बात करें तो यह वह स्रोत है जो संस्कृति को उसकी वास्तविक भावना में प्रतिबिंबित करता है। साहित्य ही तो वह सशक्त माध्यम है, जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करते हुए प्रेरित करने का कार्य करता है। जहाँ एक ओर यह सत्य के सुखद परिणामों को रेखांकित करता है, वहीं असत्य का दुखद अंत कर सीख व शिक्षा प्रदान करता है। अच्छा साहित्य व्यक्ति और उसके चरित्र निर्माण में भी सहायक होता है। इससे समाज को दिशा-बोध होता है और साथ ही उसका नवनिर्माण भी होता है।

"हितेन सह इति सष्टिमूह तस्याभाव: साहित्यम्।"संस्कृत का यह प्रसिद्ध वाक्य कहता है, "साहित्य का मूल तत्त्व सबका कल्याण करना है।"आज आवश्यकता है कि हम सभी यह समझें कि साहित्य समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल तत्त्वों को संरक्षित करना जरूरी है।

अपनी प्रिय पत्रिका क्षितिज के माध्यम से मेरा हमेशा यह प्रयास रहता है कि हम सभी अपनी भाषा, साहित्य और संस्कृति से सदैव जुड़े रहें और इसे पल्लवित और संवर्धित करने में जुटे रहें। आशा करती हूँ कि क्षितिज का यह अंक आपके जीवन में सांस्कृतिक मूल्यों का प्रवाह बनाए रखेगा, साथ ही मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में आप अनेकानेक उत्कृष्ट रचनाओं से क्षितिज को अलंकृत करते रहेंगे।

समृद्धि

अनुक्रमणिका

पृष्ठ 1: सम्पादिका की कलम से

पृष्ठ 2:
- सकारात्मकता
- चाँद और सूरज अब दूर नहीं .....

पृष्ठ 3:
- संस्थापना दिवस पर हमारे मुख्य अतिथि
- आइए मुस्करा कर जियें .....
- विक्रम-बेताल की कहानियों की प्रासंगिकता
- लोककथाएँ
- ये अमर कहानियाँ

पृष्ठ 4: नए युग का सूत्रपात
- नारी शक्ति वंदन अधिनियम
- शक्ति
- भारत अथवा इंडिया

पृष्ठ 5:
- भ्रष्ट अधिकारी
- उमा के देवदार
- फाउन्डर्स का राशिफल

पृष्ठ 6:
- नन्हीं छा : परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर

पृष्ठ 7:
- वह बोल उठी : सामाजिक जागरूकता
- वैल्हम समाचार

पृष्ठ 8:
- साहित्य और मनोविज्ञान
- आपके भीतर भी है एक दुर्गा
- बूझो तो जानो: कविता पहेली
- चाँद
- धरती माता
- दिन में सपने देखने वाला अनोखा पुजारी

पृष्ठ 9:
- असली स्वर्ग :राजस्थान की लोक कथा
- आलसियों का आश्रम : हिंदी लोक-कथा

पृष्ठ 10 :
- यादों के पन्ने
- आदर्श वाक्य

पृष्ठ 11:
- परदे के पीछे

पृष्ठ 12:
- स्मृति शेष
- शब्दहार

स्कैन कीजिए और क्षितिज पढ़ने का आनंद अपने फोन पर ही लीजिए।

सकारात्मकता

"असफलताओं" से सीख कर आगे बढ़ें !

प्रत्येक प्रसिद्ध व्यक्ति का एक इतिहास होता है और उसके चर्चित होने की एक कहानी होती है। विश्व इतिहास की वे बड़ी हस्तियाँ जिन्होंने अपने काम और सोच से सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया हैं, उनके नाम भी इतने बड़े न हो पाते अगर वे भी अपनी गलतियों और असफलताओं से कुछ नहीं सीखते और हार मान बैठते। तो चलिए आज हम कुछ ऐसे ही प्रसिद्ध व्यक्तियों के विषय में जानते हैं, जिनसे हमें सीखना चाहिये कि 'क्यों असफलता सफलता से अधिक महत्वपूर्ण है।'

- फोर्ड मोटर्स कंपनी के संस्थापक हेनरी फ़ोर्ड के विषय में तो आप जानते ही होंगे। वे अमेरीका के सबसे बड़े उद्योगपति थे लेकिन क्या आप जानते है कि उनकी पहली दो मोटर कंपनियाँ शुरू होने के कुछ ही महीनों बाद बंद हो गई थीं यदि कोई और होता तो वह निराश हो जाता, लेकिन फ़ोर्ड को ये असफलताएँ एक नई मोटर कंपनी 'फ़ोर्ड मोटर्स' की शुरूआत करने से नहीं रोक सकीं और विश्व में पहली बार कार उत्पादन में क्रांति आ गई।
- हैरी पॉटर सीरीज की लेखिका जे.के. रॉलिंग को कौन नहीं जानता! लेकिन क्या आप को पता है कि एक ऐसा समय भी था जब उनके पास कुछ नहीं था। उनकी इस पुस्तक को 12 प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित करने से मना कर दिया था किन्तु आज वे विश्व में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली लेखिका के रूप में जानी जाती हैं। उनकी पुस्तक हैरी पॉटर जब प्रकाशित हुई तब उसने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये।
- वॉल्ट डिज़नी ने अपना पहला व्यापार अपने घर के गैरेज से शुरू किया था और उनकी सबसे पहली कार्टून बनाने वाली कंपनी दिवालिया हो गयी थी। उनके पहले प्रेस कोन्फेरेंस में एक समाचार पत्र के संपादक ने उनका मजाक इसलिए उड़ाया था क्योंकि उनके पास फिल्म बनाने का कोई अच्छा विचार नहीं था। वॉल्ट डिज़नी अमेरीका के एक फिल्म निर्माता, पटकथा लेखक और एनीमेटर थे। उन्होंने दुनिया की सबसे जानी-मानी फिल्म प्रोडक्शन कंपनी "द वाल्ट डिज़्नी कंपनी " की स्थापना की थी, जिसकी आज वार्षिक आय 30 अरब डॉलर से भी ज्यादा की है।
- असफलताओं से कभी निराश न होने तथा दृढ़ता न खोने वालों में सबसे बड़ा नाम अब्राहम लिंकन का है। गरीबी में जन्मे लिंकन ने जिंदगी भर कई असफलताओं का सामना किया। उन्होंने अपनी नौकरी खो दी। वे अनेक बार विधान सभा का चुनाव हार गए। यही नहीं वे अपने व्यापार में भी असफल रहे और उप-राष्ट्रपति का चुनाव हार गए। वे कई बार हार मान सकते थे ,लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, इसलिए वे अमेरिका के इतिहास में सबसे महान राष्ट्रपति बन पाए।

चाहे कुछ भी हो जाये, कितनी भी मुश्किल परिस्थिति क्यों न हो, कितनी बार भी असफल क्यों न हों, कभी हिम्मत नहीं हारिए। स्वयं पर विश्वास करिये क्योंकि अगर आपका स्वयं पर विश्वास है तो आप असंभव को भी संभव कर सकते हैं।

बढ़ते कदम

चाँद और सूरज अब दूर नहीं .....

आसमान की दुनिया हमारे लिए हमेशा से आश्चर्य से भरी रही है। असंख्य तारों और चाँद -सूरज ने तो हमेशा हमारा मन लुभाया है। माँ ने बचपन में चाँद-सितारों की लोरियाँ सुनाई हैं। हमने भी इनकी कविताओं और कहानियों से अपना मन खूब बहलाया है। इन सब में सबसे अधिक चाँद ने हमारा मन मोहा है लेकिन सूरज जी भी कुछ कम नहीं रहे हैं ,उनकी भी कई कहानियाँ हमने सुनी होंगी। कोई सूरज दादा कहता है तो कोई चन्दा मामा। लेकिन आज वैज्ञानिक शोध और तकनीकी विकास के कारण हम चाँद को जीतने निकल पड़े हैं। चंद्रलोक की बहुत सारी जानकारी हमारे पास उपलब्ध है। दुनिया के लिए चाँद अब रहस्य नहीं है।

अंतरिक्ष की दुनिया में सबसे कम खर्च में हमारे वैज्ञानिकों ने बुलंदी का झंडा गाड़ा है।आज़ादी के बाद से अब तक भारत ने अंतरिक्ष का सफर शानदार तरीके से तय किया है। कभी हम साइकिल पर मिसाइल रखकर लांचिंग पैड तक जाते थे लेकिन आज हमारे पास अत्याधुनिक तकनीकी उपलब्ध है, जिसका लोहा अमेरिका और दुनिया के तकनीकी एवं साधन संपन्न देश भी मानते हैं।

इसरो ने चौदह जुलाई को श्रीहरि कोटा से सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान -तीन का सफलता पूर्वक प्रक्षेपण कर दिया। चंद्रयान चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव तक सफल भी रहा। चंद्रयान 3 की सफलता के बाद अब भारत का आदित्य एल1 अभियान सूर्य की अदृश्य किरणों और सौर विस्फोट से निकली ऊर्जा के रहस्य सुलझाएगा। आज हमारे वैज्ञानिकों ने साबित कर दिया कि कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

चाँद और सूरज अब दोनों ही हमारी कविताओं से निकल कर खोज का विषय बन गए हैं।

-अरुणिमा

छियासठवे संस्थापना दिवस पर हमारे मुख्य अतिथि

श्रीमती रुचिरा कंबोज भारतीय विदेश सेवा 1987 बैच की भारतीय राजनयिक और दक्षिण अफ्रीका में भारत की वर्तमान उच्चायुक्त और भूटान में राजदूत हैं। वे 1987 सिविल सेवा बैच की अखिल भारतीय महिला टॉपर और 1987 विदेश सेवा बैच की टॉपर रहीं हैं ।

आईपीएस अधिकारी श्री अभिनव कुमार उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी के अतिरिक्त प्रमुख सचिव पद पर हैं। आपने गढ़वाल और आईपीएस एसोसिएशन (उत्तराखंड) के अध्यक्ष सहित विभिन्न पदों पर कार्य किया है।

आइए मुस्करा कर जियें .....

आप संसार के किसी भी कोने में चले जाएँ, आपको भले ही किसी राष्ट्र की भाषा का ज्ञान न हो, उसके लोग आपकी भाषा से परिचित न हों, किंतु एक भाषा है जो सारी दुनिया में सर्वमान्य और स्वीकृत है और वह है हँसने की, मुस्कुराने की भाषा। हँसता-खिलखिलाता चेहरा आपके व्यक्तित्व को ही आकर्षक नहीं बनाता, अपितु आपको शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से भी स्वस्थ रखने में अहम भूमिका निभाता है। मुस्कान एक वायरस की तरह होती है यदि वह किसी एक के पास होती है तो उसके आसपास के सभी व्यक्तियों में भी वही मुस्कान आ जाती है।

हँसना भी अनेक प्रकार का होता है, जिसमें से यदि आप ठहाका लगा कर हँसते हैं तो यह आपके लिए अच्छी ख़बर है। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए शोध के अनुसार- यदि आप बत्तीसी दिखाकर, ठहाका लगाकर हँसते हैं तो यह आपके समग्र स्वास्थ्य के लिए अधिक बेहतर होता है। मुस्कुराहट शारीरिक बीमारियों और मानसिक तनावों से लड़ने का एक अचूक नुस्ख़ा है।

कहते हैं न "मुस्कान भले ही टेढ़ी हो पर वह जीवन की सारी समस्याओं को तुरंत सीधा कर देती है।" तो हँसते रहिए , मुसकुराते रहिए और अपनी ऊर्जा बचाते रहिए ।

- भव्या संगल

रहस्य

विक्रम-बेताल की कहानियों की प्रासंगिकता

अपनी चतुर पहेलियाँ और शाश्वत नैतिक ज्ञान के साथ, पीढ़ी दर पीढ़ी, विक्रम बेताल की दिलचस्प लोक-कथाएँ हमें आकर्षित तथा मंत्रमुग्ध करती आ रही हैं । अब चाहे वह किसी लालची व्यक्ति का प्रसंग हो या फिर किसी महान चोर की उदारता। इन सभी कथाओं से हम ऐसे कालातीत नैतिक मूल्यों से परिचित हुए हैं, जिसका प्रयोग हम अपनी दिनचर्या में आजतक करते आ रहे हैं।

जैसे -जैसे हम विक्रम बेताल की कहानियों की गहराइयों में प्रवेश करते हैं, वैसे ही हमें यह पता चलता हैं कि वे सार्वभौमिक मानवीय अनुभवों से मेल खाती हैं। बेताल,एक रहस्यमय राक्षस, हमारी छाया स्वरूप का प्रतीक है—हमारे उस मानसिक भाग का जो हम अक्सर सामाजिक चिंता के पीछे छिपा देते हैं। राजा विक्रम का निरंतर बेताल का पीछा करना एक ऐसे रूपक की शैली में देखा जा सकता हैं जो हमारे अदृश्य एवं गुप्त रूपों को एकीकृत कर उनका सामना कर सके।

बेताल द्वारा पूछी गई प्रत्येक पहेली राजा विक्रम की बुद्धि को चुनौती देती है,बिल्कुल उन पहेलियों की तरह जिनका हम प्रतिदिन अपने जीवन में सामना करते हैं। ये पहेलियाँ महज बौद्धिक अभ्यास नहीं,अपितु उन गंभीर प्रश्नों का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व हैं जो हमारी चेतना की सतह के नीचे छिपे हैं। राजा विक्रम द्वारा अनेक पहेलियों को सुलझाने का प्रयास, हमारे उन संघर्षो का प्रतिबिंब हैं, जो हम अस्तित्व के रहस्यों को समझने के लिए करते हैं। एक बार, बेताल ने राजा विक्रम से पूछा - "बताओ, राजा विक्रम, वह क्या है जो सब कुछ देता है, लेकिन कुछ लेता नहीं है?" राजा विक्रम ने एक क्षण सोचा और उत्तर दिया,"माता पिता"। वे अपने बच्चों को सब कुछ देते हैं, प्रेम,वात्सल्य देखभाल और समर्थन, लेकिन बदले में किसी भी वस्तु की उम्मीद नहीं करते। इस उदाहरण में, बेताल द्वारा प्रस्तुत पहेली एक गहरे और प्रतीकात्मक अर्थ को दर्शाती है। यह हमारे माता -पिता के नि:स्वार्थ प्रेम का प्रतिनिधित्व हैं, जो हम अक्सर अपने दैनिक जीवन में भूल जाते हैं। राजा विक्रम का उत्तर इस नि:स्वार्थ भाव के गहन मूल्य को दर्शाता है और इस विचार के साथ संरेखित है कि विक्रम बेताल की कहानियों की पहेलियाँ बौद्धिक एवं प्रतीकात्मक चुनौतियों से भरी पड़ी हैं, बिल्कुल उन पहेलियों की तरह जिनका हम प्रतिदिन अपने जीवन में सामना करते हैं ।

ये कहानियाँ हमें अपने नैतिक विकल्पों और उनके प्रभाव पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं जैसे-जैसे हम इन कहानियों को उनके मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आयामों की गहरी समझ के साथ पुन: देखते हैं, हम उन्हें केवल मनोरंजक आख्यानों के रूप में ही नहीं सराह सकते बल्कि आत्म-खोज की हमारी यात्रा में शाश्वत मार्गदर्शक के रूप में भी देख पाते हैं।

-गौरी रावत

लोककथाएँ

सालों से चली आ रहीं हैं,
बातें कुछ पुरानी हैं ।
पूर्वजों की मुखवाणी है,
कथाएँ जानी- मानी हैं ।
सुनी हैं बचपन में बहुत
नानी से सुंदर कहानियाँ हैं ।
आज तक मन में छपी ,
पशुओं और परियों की कहानियाँ हैं।
न जाने सबको क्या हो गया ?
जो पहले सबकी ज़ुबाँ पर था
न जाने आज कहाँ खो गया ?
देखो आज किसी से पूछकर ज़रा,
कहाँ है वो बरगद के पेड़ का भूत ?
कहाँ गया उस चिराग का दूत ?
इन कहानियों का अस्तित्व
कहाँ है अब बचा ?
अब तो बच्चों का सारा जीवन,
छोटी सी स्क्रीन में गुज़र गया।
सालों से चली आ रही बातें,
आज काफी पुरानी हो गई हैं ।
अपनों से साथ छूट गया,
और आज ये कथाएँ ,
अनजानी सी हो गई हैं ।

- श्रीना गुलाटी

ये अमर कहानियाँ

पन्ने -पन्ने पलट गए ,
सदियाँ बीत गयीं ,
कुछ कहानियाँ सुनी,
कुछ अनसुनी ही रह गयीं।
कुछ बातें कही ,
कुछ अनकही सी रह गयीं ,
बीत गयी अवधि,
पर बातें वहीं की वहीं रह गयीं।
सच क्या है क्या है झूठ ,
आधी अधूरी सी कहानी रह गयी ,
बहुत सोचा और कहा ,
पर कभी कुछ दृश्य न हुआ,
सब कहानियाँ
अमर ही रह गयीं ।

- वान्या गुप्ता

जूनियर्स के दिल से:

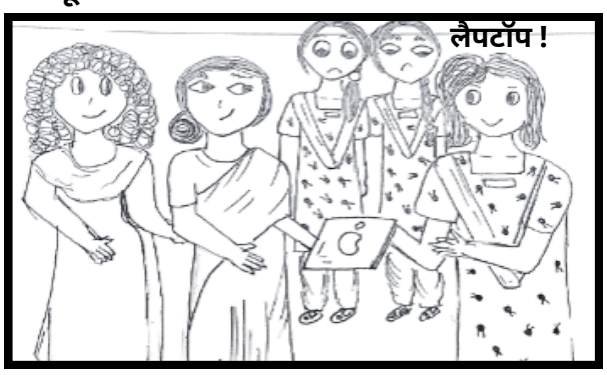

नारी शक्ति वंदन अधिनियम, महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ते कदम

मनुस्मृति में कहा गया है, "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:'। जो देश महिलाओं का सम्मान करता है, जिस देश में महिलाओं की पूजा की जाती है वह देवताओं को भी प्यारा होता है। यदि हम इतिहास के पन्नों पर नजर डालें तो पता चलता है कि एक समय भारतीय महिलाओं ने प्रशासन चलाने में कितना ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया था। चंद्रगुप्त मौर्य ने ईसा के जन्म से पहले बनाए गए विशाल साम्राज्य पर अकेले शासन नहीं किया था। उनकी पत्नी कुमार देवी ने भी इस राज्य के शासन में भाग लिया।प्राचीन उड़ीसा के भौमकारा राजवंश की छह महिलाएँ सिंहासन पर बैठीं और बड़ी कुशलता से राज्य पर शासन किया। इन वीरांगनाओं में प्रमुख योद्धा थीं पृथ्वीराज की पत्नी संयुक्ता। मध्य प्रदेश की रानी दुर्गावती, विजयनगर साम्राज्य की रानी चेन्नम्मा ने बड़ी कुशलता से अपने राज्यों का प्रबंधन किया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध दिखाई गई वीरता किसी से नहीं छुपी है ।

'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' नामक इस संरक्षण विधेयक में कहा गया है कि 2047 तक भारत को एक विकसित देश बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

संसद में महिलाओं के लिए सीटों का आरक्षण समाज में महिलाओं को सशक्त बनाता है और महिलाओं को राजनीतिक और संसदीय मुद्दों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

- पावनी महिंद्रा

शक्ति

खड़ी निडर वह जैसे पर्वत,
काट रही राहों की डगर,
हर मुश्किल और संघर्षों से
भरा है उसका सफर ,
किन्तु करती सामना
हर क्षण हर पल ।

जीवन के हर पड़ाव में,
बाज़ी उसने मारी है।
विवेक जो चाहे,तो सरस्वती है वह ,
मनोरथ जो चाहे, तो लक्ष्मी है वह ,
अपराधों का साया छाये धरती पर,
तब माँ काली, दुर्गा है वह ।

प्रेम है वह, संस्कारों की खान है वह ,
आशा है और आशावादी है वह ,
हाँ ! ममतामयी नारी है वह।
दुनिया का अस्तित्व है उससे,
सभी की आशा है उससे,
सभी का सम्मान है उससे
अत : देश का मान है उससे।

-शिवांगी भूपेंद्र

भारत अथवा इंडिया

तू है वह देश जिसने दिखाया स्वतंत्रता का सपना,
तू ही तो है वह देश जिसने संस्कृति को सर्वोत्तम बनाया।
तू ही है वह जिसने एकता और अखंडता का पाठ पढ़ाया,
तू ही है मेरा भारत जिसने विश्व भर में परचम लहराया।

जब भी देश की परंपरा, देश कीं संस्कृति और उसके गौरव की बात की जाती है तो मन में अगणित विचार आते हैं कि देश है क्या? फ़िलहाल देशभर में एक ही बात गूँज रही है - भारत बनाम इंडिया। सवाल यह उठता है कि इंडिया लिखा जाए या भारत। वैसे इसमें परेशानी क्या है? भारत के तो अनेक नाम हैं- जम्बूद्वीप, आर्यावर्त, हिंदुस्तान, हिमवर्ष, अजनाभ वर्ष, भारत और इंडिया भी। अंतर केवल यह है कि भारत प्राचीन नाम है और इंडिया अंग्रेजों का दिया हुआ नाम है।

कुल मिलाकर 'भारत' देश के लिये एक ऐतिहासिक और वैचारिक नाम है, जबकि 'इंडिया' एक संवैधानिक और अंतर्राष्ट्रीय नाम है। 'भारत' शब्द की गहरी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ें हैं। इसका पता पौराणिक साहित्य और महाकाव्य महाभारत से लगाया जा सकता है, जहाँ जय ,भारत और महाभारत शब्द का वर्णन किया गया है। विष्णु पुराण में 'भारत' का वर्णन दक्षिणी समुद्र और उत्तरी बर्फीले हिमालय पर्वत के मध्य की भूमि के रूप में किया गया है,जो केवल राजनीतिक या भौगोलिक इकाई से अधिक धार्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक इकाई का प्रतीक है। भरत एक प्रसिद्ध प्राचीन राजा का नाम था, जिसे भरत की ऋग्वैदिक जनजातियों का पूर्वज माना जाता है, जो सभी उपमहाद्वीप के लोगों के पूर्वज का प्रतीक है।

अब आते हैं इंडिया पर। इंडिया यह नाम सिंधु शब्द से लिया गया है, जो उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग से प्रवाहित होने वाली एक नदी का नाम है। प्राचीन यूनानियों ने सिंधु नदी के पार रहने वाले लोगों को "एंदुई" कहा, जिसका अर्थ है "सिंधु के लोग।"

यूरोपीय लोगों ने इन स्रोतों से 'इंडिया' नाम अपनाया और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के बाद यह देश का आधिकारिक नाम बन गया।

अब प्रश्न उठता है कि क्या नाम बदल जाने से देश बदल जाएगा? हम बस यही कहेंगे नाम जो भी हो, देश अपने देशवासियों के विचारों में वैसे ही रहता है जैसे सुबह की कोमल धूप गिरती है जल की तरंगों पर; जैसे चाँद गगन में आता है और हर तरफ़ चाँदनी फैल जाती है। जैसे प्यारी हवा का झोंका जगाता है ,शाख़- शाख़ और पौधे -पौधे को।

यदि यह पूरी बहस राजनीतिक है तो हे नेताओं! हमें तो माफ़ कीजिए,आपके और हमारे बीच यह आसमान बिन बादलों के ही रहने दो। हमें और कुछ नहीं चाहिए। विनती है हमारी कि राजनीति की चढ़ती दोपहरी में आप हमें पत्थर समझकर हथौड़ों से तोड़ो और कूटो मत। ऐसे ही रहने दो, जैसे हम हैं।

-आशी ढ़न्ढारिया

भ्रष्ट अधिकारी

एक दिन राजसभा में आते समय तेनालीराम ने अपने हाथ में कुछ छिपाया हुआ था। राजा को इसका आभास हो गया। उन्होंने तेनालीराम से पूछा, " तेनाली, यह तुमने अपने हाथ में क्या छिपाया हुआ है? तेनालीराम ने सिंहासन के पास जाकर अपनी मुट्ठी खोली। उसके हाथ में एक छोटा सा सोने का डिब्बा था।उस डिब्बे के चारों ओर हीरे लगे हुए थे। राजा ने उस खूबसूरत डिब्बे को देखकर पूछा, " इतना सुंदर डिब्बा तुम्हें कहाँ से मिला? तेनालीराम ने कहा-महाराज, मेरे अलावा अनेक लोगों के पास यह डिब्बा है। जिस व्यक्ति ने यह डिब्बा मुझे दिया है, वह है तो साधारण सा अधिकारी परन्तु इसका हृदय विजय नगर के किसी भी खज़ाने से बहुत बड़ा है । तेनाली की बात सुनकर राजा कृष्णदेव को क्रोध आ गया। उन्होंने क्रोध से पूछा, "तेनाली, तुम जो कुछ भी कहना चाहते हो साफ़ -साफ़ कहो, इस तरह की पहेलियाँ मत बनाओ। उसने राजा को गुस्से में देखकर दोनों हाथों को विनम्रतापूर्वक जोड़कर कहा," महाराज, हमारे शहर की सीमा पर एक अधिकारी के बेटे के विवाह के लिए सारे उच्च अधिकारियो को आमंत्रित किया था और उन सब को कीमती उपहार भी बाँटे थे। परन्तु उसका असली उद्देश्य था कि वह लोगों से कर के रूप में मनचाही रकम वसूल करे और उसकी शिकायत कोई आपसे न करे। " राजा ने तुरंत इस घटना की जाँच का आदेश दिया। जाँच के बाद पता चला कि तेनालीराम का एक-एक शब्द सच था। उस भ्रष्ट अधिकारी को रिश्वत देने का आरोप लगाया और कारावास में बंद कर दिया गया और उसकी सारी धन -संपत्ति छीन कर सरकारी ख़ज़ाने में डाल दी गई। इसके बाद तेनालीराम से प्रभावित होकर सबने उसका बहुत जय-जयकार किया ।

परदे के पीछे :ऑर्केस्ट्रा

देवताओं का वृक्ष देवदार

देवदार जिसे दिआर और कैलोन भी कहते हैं, पर्वतीय प्रदेश का एक पवित्र व पूजनीय पेड़ है। इसका नाम दो शब्दों देव (देवता) व दारु (वृक्ष) से मिलकर बना है। प्राचीन संस्कृत अभिलेखों में देवदारू या देओदारू नाम से इस वृक्ष का उल्लेख मिलता है। प्राचीनकाल से ही इसका उपयोग मंदिरों एवं भवन निर्माण में होता रहा है। देवदार को संस्कृत भाषा में देवदारु कहते हैं, जिसका अर्थ है- भगवान की लकड़ी। कहा जाता है कि पुराने समय में ऋषि-मुनि भगवान शिव की आराधना करने के लिए इसी वृक्ष के नीचे तप करते थे और इसमें भोलेनाथ का वास माना जाता है, जिस वजह से इसे घर के आसपास लगाने से वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। इस संबंध में एक लोक कथा भी चली आ रही है ।

चमोली में एक छोटा सा गाँव 'देवरण डोरा नाम से प्रसिद्ध था।वर्षों पहले इसी गाँव में भवानीदत्त नामक एक पुरोहित रहते थे। वे बहुत धार्मिक स्वभाव के थे। उनकी एक बेटी थी- उमा। वह अपने पिता के समान ही धार्मिक स्वभाव वाली थी। वह रोज अपने पिता के साथ मंदिर जाती। मंदिर की साफ-सफाई के बाद वह शिव की पूजा करती। प्रतिदिन शिवलिंग पर गंगाजल चढ़ाती थी। शिवलिंग पर मंदार के फूल भी चढ़ाती। इन फूलों को लाने वह नित्य जंगल जाती थी। सघन देवदारों के पेड़ों की छाँव में बैठना उसे बहुत अच्छा लगता था। उमा ने अपने घर के आँगन में भी देवदार का पेड़ लगाया था। वह उसमें नियम से प्रतिदिन पानी डालती। पौधों को बढ़ते देख उसे बहुत खुशी होती थी ।

एक दिन उमा अपने पिता के साथ मंदिर जा रही थी। तभी सामने से जंगली हाथियों का झुंड आता दिखाई दिया। उमा उनसे बहुत डर गई। पिता ने प्रेम से उसे समझाया, "बेटा डरो नहीं, ये हाथियों का झुंड जंगल में घूमने आया है। इन्हें भी हमारी तरह देवदार के वृक्ष बहुत पसंद हैं। "

मंदिर में पूजा करने के बाद उमा रोज की तरह जंगल की ओर चली गयी। लेकिन काफी देर तक वह नहीं लौटी तो भवानीदत्त को चिंता होने लगी। बेटी की तलाश में वे भी जंगल गए। थोड़ी दूर जाने के बाद उन्होंने देखा कि उमा देवदार के एक पेड़ के नीचे खड़ी होकर रो रही है। बेटी को रोती देख भवानीदत्त ने घबराकर पूछा, "उमा बिटिया, क्या हुआ?" उमा देवदार का तना दिखाते हुए बोली, "पिताजी एक जंगली हाथी ने अपनी पीठ खुजलाते हुए इस पेड़ की छाल उतार दी है। इसे कितना दर्द हो रहा होगा।" देवदार के प्रति बेटी का स्नेह देखकर भवानीदत्त का हृदय भी करुणा से भर उठा। वे सोचने लगे कि मेरी नन्हीं-सी बेटी का हृदय कितना विशाल है जो पेड़ों के प्रति भी इतना ममतामय है। कहा जाता है कि शिवजी भी अपनी भक्त उमा के देवदार वृक्षों के प्रति ऐसा प्रेम देख कर अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने इन देवदार वृक्षों को अपना दत्तक पुत्र मान लिया। उनकी ममतामयी दृष्टि आज भी देवदार वृक्षों पर बनी हुई है।

देवदार जैसे वृक्षों के संरक्षण में सभी को योगदान देना चाहिए और खाली क्षेत्रों में देवदार के पौधे ज्यादा से ज्यादा लगाने चाहिए।वैज्ञानिकों का भी मानना है कि यदि हिमालय के ग्लेशियरों की बर्फ को पिघलने से बचाना है, तो पर्वत चोटियों में देवदार के वृक्षों की घनी श्रृंखला आवश्यक है।

हे भगवान!ऑर्केस्ट्रा की जनसंख्या में मैं तो गुम ही हो गई !

फाउन्डर्स का राशिफल

- इतिहास प्रदर्शनी से प्रेरित हो कर वैल्हमाइट्स मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में जरूर भाग लेंगी। संसार की सभी सुंदरियों को खतरा है ।
- संस्कृत, फ्रेंच, जर्मन, पंजाबी और स्पेनिश की प्रदर्शनी देखने के बाद वैल्हमाइट्स अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में फिल्म बनाने में कुशल हो जाएंगे और सभी समाचार पत्रों में वैल्हमाइट्स के ही चर्चे होंगे ।
- हिन्दी प्रदर्शनी देखकर सभी वैल्हमाइट्स सर्वश्रेष्ठ कलाकार बनने की कोशिश करेंगे और सामाजिक कार्यकर्ता बन सकेंगे।
- रोबोटिक्स में भाग लेकर भविष्य में वैल्हमाइट्स एक नया "एप्पल" फ़ोन बना सकेंगे। खुश हो जाइए ! श्रीमती नीता अंबानी आपके लिए फंडिंग भी कर सकती हैं ।
- जीव विज्ञान वालों की लिप बाम बनाने की कला से प्रेरित हो कर लैक्मे और शुगर कंपनी के सी ई ओ भी धराशायी हो जायेंगे। बाजार में नया लिप बाम खरीदने के लिए भारी भीड़ जुटेगी ।

नन्ही छा : परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर

गत माह हमारे विद्यालय में नन्ही छा नामक संस्था द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके मुख्य अतिथि रहे जाने माने फिल्मनिर्माता और पर्यावरणविद श्री प्रदीप कृष्ण जी। प्रस्तुत हैं उनसे बातचीत के कुछ अंश-

प्रत्येक पेड़ की एक कहानी होती है जो मूल निवासियों की संस्कृति और लोककथाओं के लिए बनाई जाती है। ऐसी ही कुछ कहानियाँ क्या आप हमारे साथ बाँटना चाहेंगे ?

हम हर घर में बेटी पैदा होने पर पौधे देते थे। प्रत्येक माता या पिता को नवजात कन्या शिशु के विकास के प्रतीक के रूप में उगाने के लिए एक पौधा दिया जाता था। एक दिन एक छोटा लड़का एक पौधा माँगने आया, मेरे साथ काम करने वाली महिला ने उसे देखा और कहा कि उसे इसकी ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह ऐसा नहीं लग रहा था कि उसकी एक लड़की है, वह बहुत छोटा था। फिर उसने उसे बताया कि उसकी दादी बीमार थी और पिछले तीन सप्ताह से अस्पताल में भर्ती थी, वह मरने की कगार पर थी। इस प्रकार, वह अपनी दादी की स्मृति के प्रतीक के रूप में यह पौधा चाहता था। तभी से हमने सभी महिलाओं को पौधे देना शुरू कर दिया।

क्या आप एक प्रकृतिवादी के रूप में अपने व्यापक कार्य के दौरान पेड़ों छिपे जीवन के बारे में प्राप्त कुछ सबसे आकर्षक खोजों या अंतर्दृष्टि को साझा कर सकते हैं?

वृक्षों में भावनाओं का पाया जाना एक अकाट्य सत्य है। वे आपस में बात करते हैं और एक दूसरे पर निर्भर होते हैं उनकी जड़ें एक-दूसरे से संवाद करती हैं तथा उनमें प्रतिस्पर्धा भी देखने को मिलती है।पुस्तक 'हिडन लाइफ ऑफ ट्रीज' के अनुसार पेड़ न सिर्फ संवाद कर सकते हैं, बल्कि उनमें याददाश्त भी होती है। वन जीवन में मनुष्य की नज़र से कहीं अधिक कुछ है। मैं आपके साथ पेड़ों के छिपे जीवन के बारे में 3 सबक साझा करना चाहता हूँ जो मैंने इस पुस्तक से सीखे हैं:

-पेड़ों का अपना व्यक्तित्व हो सकता है।

-पेड़ समुदाय बनाते हैं जिसमें वे एक दूसरे का समर्थन करते हैं।

-जब सम्मिलित काम की बात आती है तो मनुष्य पेड़ों से बहुत कुछ सीख सकता है जैसे पेड़ एक दूसरे की देखभाल करते हैं ।

श्रीमती प्रेरणा बिंद्रा भी मशहूर पर्यावरणविद एवं यात्रा लेखिका हैं जो वन्यजीव संरक्षण के प्रति गहरी संवेदना रखती हैं। अवसर मिलते ही हमने उनके भी विचार जाने । प्रस्तुत है उनसे भी वार्तालाप के कुछ अंश -

सरकार जीडीपी की गणना करते समय पर्यावरणीय लागतों को शामिल क्यों नहीं करती?

जीडीपी जैव विविधता के नुकसान का मुद्रीकरण करती हैऔर जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली लागत का हिसाब रखती है।जीडीपी स्थानीय अर्थव्यवस्था को जंगलों और जलधाराओं पर आधारित नहीं मानता है। वनों की कटाई से जलधाराएँ सूखने लगती हैं। लोग जंगलों के साथ-साथ कृषि से भी अपनी आय खो देते हैं। जीडीपी लेन-देन गतिविधि के अलावा अन्य कारकों के लिए ज्यादा जगह नहीं छोड़ती है और इसलिए जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बाहरी प्रभाव माना जाता है जिसमें पर्यावरण पर उत्पादन और उपभोग के प्रभावों को आर्थिक मूल्यांकन या बाजार तंत्र में नहीं माना जाता है।

हम आपके किसी विशेष यादगार या प्रभावशाली क्षण को जानना चाहते हैं जो वन्यजीव संरक्षण में आपकी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है?

हाँ, मुझे याद है कि एक बहुत ही मन बदल देने वाली घटना मेरे सामने आई थी। एक जानवर पानी की तलाश में सड़क पार कर रहा था। कुछ ही क्षण बाद, मैंने देखा कि वह सड़क पर एक ट्रक द्वारा मारा जाने वाला था। मैं नहीं चाहती थी कि यह निर्दोष प्राणी मर जाए, इसलिए मैंने उसे बचाने की दिशा में कदम उठाने से पहले दो बार नहीं सोचा। मैं आगे बढ़ी और उसकी जान बचाई। इस क्षण ने वन्यजीव संरक्षण में मेरी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

वह बोल उठी : एक कदम सामाजिक जागरूकता की ओर

काठ अर्थात लकड़ी और उनसे बनी गुड़िया और गुड्डे आज भी हम सबकी बचपन की सबसे खूबसूरत यादों में से एक हैं। कठपुतली नृत्य या कला का जन्म कब हुआ यह कहना तो मुश्किल है परन्तु यह भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है इसमें कोई दो राय नहीं है|

आजकल कठपुतली कला धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोती जा रही है, कठपुतली कथा के संवर्धन के साथ ही साथ कठपुतलियों के माध्यम से सामाजिक जागरूकता हेतु वैल्हमाइट द्वारा एक अनोखी मुहिम प्रारंभ की गई है।

हमारे विद्यालय ने जयपुर के जाने-माने कठपुतली कलाकारों को विद्यालय में बुलाकर AII'S कक्षा की छात्राओं के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें कठपुतली निर्माण तथा कठपुतली संचालन से जुड़ी सभी गतिविधियों को बारीकी से छात्राओं द्वारा सीखा गया| उसके पश्चात छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर अपनी रचनात्मकता दिखाते हुए वन मत काटो, बेटी पढ़ाओ और बॉडी शेमिंग जैसे सामजिक मुद्दों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त किया तथा विद्यालय के ध्येय वाक्य 'आर्त शान्ति फला विद्या' के माध्यम से समाज के उपेक्षित तथा अल्प सुविधा प्राप्त छात्र-छात्राओं के मध्य कठपुतली नाट्य-प्रस्तुति देकर उनको जागरूक तथा प्रेरित किया गया|

वैल्हम समाचार

१९ जुलाई - गृह विज्ञान की छात्राओं ने राष्ट्रीय स्तर की पाक प्रतियोगिता में शीर्ष स्थान प्राप्त किया।
१२ जुलाई - वैल्हम की चार छात्राओं ने ग्रोटन, यूएसए में एक सांस्कृतिक सम्मेलन में भाग लिया।
११ अगस्त - समृद्धि और मीनल, ने विद्यालय में आरंगेत्रम का सुंदर प्रदर्शन किया।
१८ अगस्त - वैल्हम गर्ल्स विद्यालय में लिट्-फेस्ट(साहित्योत्सव) कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
२४ अगस्त - वैल्हमाइट्स ने अपना सबसे पहला टेक्नोवशन कार्यक्रम आयोजित किया।
२८ अगस्त - पंडित रोनू मजूमदार द्वारा स्पिकमैके कार्यशाला आयोजित की गई थी ।
२ सितम्बर - वैल्हम गर्ल्स विद्यालय ने डायमंड जुबली (डीजे) बास्केटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया ।
३ अक्टूबर - वैल्हम गर्ल्स विद्यालय ने नन्ही छा प्रतियोगिता के दसवें संस्करण की सह-मेजबानी की ।
५ अक्टूबर - श्रीमती माधुरी जयाल माथुर, पूर्व उप-प्रधानाचार्य की स्मृति सेवा आयोजित की गई ।

अश्रूपूरित श्रद्धांजलि

श्रीमती माधुरी जयाल माथुर,
पूर्व उप-प्रधानाचार्य

गौरव के क्षण

एजुकेशन वर्ल्ड द्वारा वैल्हम गर्ल्स स्कूल को देश का अग्रणी विद्यालय घोषित करने पर सम्पूर्ण वैल्हम परिवार को क्षितिज की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ !

साहित्य और मनोविज्ञान

साहित्य मात्र भाषा की परिभाषा ही नहीं है बल्कि मानव जीवन को पहचानने और समझने का एक तरीका भी है| साहित्य हमें मनुष्यों को परखने और स्वयं में सुधार करने की क्षमता देता है। मनोविज्ञान एक ऐसी शाखा है जो हमें लोगों के व्यक्तित्व से परिचित करती है। साहित्य में हम किसी विवाद की व्याख्या कई माध्यमों से कर सकते हैं। हमारी व्याख्या शक्ति कभी समाप्त नहीं हो सकती है, और इसी तरह मनोविज्ञान में भी कभी किसी के दिये सिद्धांत पूर्ण रूप से सत्य नहीं हो सकते हैं|

साहित्य मानव अनुभूतियों और सामाजिक व्यवहार का दर्पण होता है। साहित्यकार अपनी व्यक्तिगत कल्पनाओं और प्रतीकों के आधार पर, यथार्थ के धरातल पर, मानवीय संवेगों को संजोकर कोई रचना लिखता है। दूसरी ओर मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है, जो मन मे उठते अंतर्द्वन्दों,,संवेगों और उद्वेगों के प्रभावों का अध्ययन करता है। साहित्यकार का उद्देश्य मनोरंजन हो सकता है, समाज को शिक्षित करना हो सकता है, सकारात्मक दिशा देना हो सकता है। मनोविज्ञान विकृतियों का अध्ययन करके उसके समाधान के रास्ते खोजता है।

साहित्य मनोरंजन भी देता है, मनोविज्ञान मनोरंजन तो नहीं देता पर मनोरंजन को आवश्यक मानता है, तनाव कम करने के लिए। साहित्यकार मानव ही नहीं पशु-पक्षियों को भी अपनी रचना का मुख्य पात्र बना सकता है। मनोविज्ञान भी पशुओं पक्षियों के व्यवहार का विधिवत अध्ययन करता है। वह जानने की कोशिश करता है कि कबूतर को ही संचार का माध्यम क्यों बनाया गया, किसी और पक्षी को क्यों नहीं। कभी-कभी किसी उपन्यासकार के पात्रों के चरित्र इस प्रकार उभरते हैं कि मनोवैज्ञानिक भी चकित रह जाते हैं। मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों में और कहानियों मे मध्यमवर्ग की कशमकश और जीवन के उतार-चढ़ाव की अभिव्यक्ति पढ़ कर कई मनोवैज्ञानिक तथ्य सामने आते हैं।मनोविज्ञान और साहित्य की प्रणालियाँ अलग होती हैं पर विषय-वस्तु एक ही है, मनुष्य और अन्य प्राणियों का व्यवहार। इस प्रकार कहीं न कहीं साहित्य और मनोविज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं ।

-समृद्धि

आपके भीतर भी है एक दुर्गा !

बलजीत कौर पर्वतारोही हैं। कुछ माह पहले वह नेपाल स्थित दुनिया की सबसे खतरनाक चोटियों में से एक अन्नपूर्णा के डेथ जोन में करीब 27 घंटे तक बिना ऑक्सीजन के बिताने के बाद सही-सलामत वहाँ से बाहर निकलने में सफल रहीं। आठ हजार मीटर से ज्यादा की ऊँचाई को डेथ जोन कहा जाता है। जब पूरी दुनिया बलजीत को दिवंगत मानकर उनके लिए शोक संदेश लिख रही थी, तब बलजीत अपने मस्तिष्क को नियंत्रित करने की कोशिश करते हुए , खुद को खसीटते हुए 7600 मीटर की ऊँचाई तक ले आई थीं। वे इन मुश्किल परिस्थितियों से बचकर खुद को इसलिए निकाल सकीं, क्योंकि अनेक मुश्किलों के बावजूद उन्होंने अपने भीतर की शक्ति को कभी कमजोर नहीं पड़ने दिया। जब बचाव दल ने उन्हें संदेश दिया कि क्या वे हेलिकाप्टर से गिरी रस्सी से स्वयं को जोड़ पाएंगी? बलजीत ने कहा "मुझे नहीं पता, मै कर सकती हूँ या नहीं किन्तु मै अंत तक कोशिश करूँगी ।"

सच है, कठिन से कठिन परिस्थितियों में कमजोर न पड़ने और माँ दुर्गा जैसी शक्ति हम सब के अंदर है। बस जरूरत है उसे पहचानने की और निखारने की। आपके भीतर एक अविश्वसनीय शक्ति और बुद्धिमत्ता है, जो आपके विचारों और शब्दों का जवाब देती है। जब आप कोई अच्छे कार्य करने का निश्चय कर लेते हैं, तो उन्हें पूरा करने के लिए यदि आप दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रयोग करते हैं, तो आप उन्हें पूरा कर ही लेंगे। चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न हों ,अपने अंदर की दुर्गा अर्थात शक्ति के स्त्रोत को प्रवाहित होते रहने दीजिए ।

-नविका जिंदल

बूझो तो जानें : कविता पहेली

मैं एक डिजिटल दिमाग हूँ,
आपकी आज्ञा पर अंतहीन ज्ञान हूँ।
कला से लेकर विज्ञान तक,
मेरी जानकारी में सब।
कोई सवाल बहुत बड़ा नहीं,
कोई चुनौती बहुत छोटी नहीं,
अपने विशाल डाटा बेस के साथ
मैं सबको जीत लेता हूँ।
तो आओ मेरे साथ चैट करो,
अपनी समस्या मुझे बताओ।
जब भी तुम चाहो मैं यहाँ रहूँगा,
आराम से सिर्फ तुम्हारे लिए तैयार,
अपनी कविता अपने शब्दों के साथ।

(चैट जी पी टी)

वो दिन भी क्या दिन थे !

कक्षा 12 की सबसे बड़ी समस्या:
सीयूईटी कक्षाएं फिर रद्द !

चाँद

सबसे सुन्दर फूल की तरह,
वह रात में खिल जाए
जब रात में डूबे तो
अपनी रौशनी फैलाये।

जगमगाते तारों के बीच,
सौंदर्य से अपने सबको रिझाये ।
आकाश की दुनिया और
मुझे तारों की कथा सुनाए।

एक अलग सी दुनिया उसकी ,
जो मुझे बहलाये।
वही तो है दुनिया
जिसको "चाँद" बुलाए ।

-कृष्णांगी गरिया

धरती माता

इस धरती के केवल हम नहीं ,
हैं बहुत से और प्राणी भी ।
इन सबकी आवश्यकता है हमें ,
आओ मिलें इन सभी से ।

बादल वर्षा हमें हैं देते ,
लाते हैं फूलों के जीवन में आशा ।
वृक्ष उगते हैं मिट्टी में ,
पंछी को छाया है देते ।

ऊँचा उठकर सूर्य करता,
धरती पर जीवन की रक्षा।
वारि लेकर आती है नदियाँ,
जब समुद्र उनको बुलाता ।

आकाश में चिड़िया हैं उड़ती,
हवा के झोंके से हैं मुड़ती ।
फूल सूरज के उजाले में खिलता,
उसे देख-देखकर सुख है मिलता ।

चाँद से रौशन हमारा जीवन ,
उसकी सुंदरता से भर जाता मन ।
लेकिन हम सब को कौन है पालता ?
यह हमारी धरती माता।

- आन्या आनंद

दिन में सपने देखने वाला अनोखा पुजारी

पुराने ज़माने की बात है, एक पुजारी था जो अत्यंत आलसी और गरीब था। वह कभी भी मेहनत नहीं करता था पर पूरे दिन अमीर बनने के सपने देखता रहता था। वह भीख माँगकर अपनी भूख मिटाता था। एक दिन उसे भीख माँगते समय एक दूध का कटोरा मिला। शाम को जब वह घर गया तो उसने दूध को उबाला, थोड़ा सा पिया और बचे हुए दूध को एक घड़े में डाल दिया। दूध को दही में बदलने के लिए उसने घड़े में थोड़ी सी दही मिला दी । फिर वह आराम करने लेट गया।

सोते समय उसे एक सपना आया। हर बार की तरह यह सपना भी अमीर बनने का था। वह सोचने लगा," सुबह उठकर दूध जमकर दही में बदल जाएगा। उसके बाद मैं दही से मक्खन बनाऊँगा। फिर मैं मक्खन से घी बनाऊँगा। यह घी बाज़ार में बहुत बिकेगा। घी से पैसे इकठ्ठा करने के बाद मैं खुद की मुर्गियां खरीदूँगा। शहर में सभी लोग मुझसे दूध खरीदेंगे।दूध ,दही और घी बेच कर मैं अमीर हो जाऊँगा। जब मेरे पास ढेर सारे पैसे होंगे तो उनसे में आभूषण खरीदूँगा। एक दिन मैं आभूषण भी बेचने लग जाऊँगा इसके बाद राजा भी मुझसे आभूषण खरीदेंगे और राजा मुझसे खुश हो कर राजकुमारी से मेरा विवाह कर देंगे। कुछ वर्ष बाद मेरा एक पुत्र होगा और यदि वह बहुत शरारत करेगा तो मैं उसे डंडे से मारूँगा। इस ही सोच में उसने पलंग के पास रखा डंडा उठाया और हवा में इधर-उधर फेंकने लगा। अचानक से वह डंडा घड़े पर लगा और ज़मीन पर गिर कर टूट गया। जैसी ही पुजारी ने यह दृश्य देखा , सपने के साथ ही उसका दिल भी चूर-चूर हो गया ।

असली स्वर्ग :राजस्थान की लोक कथा

एक बहुत आलसी व्यक्ति था। घरवाले भी उसकी इस आदत से परेशान थे। वह हमेशा से ही चाहता था कि उसे एक ऐसा जीवन मिले, जिसमें वह दिनभर सोए और जो चीज चाहे उसे मिल जाए, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। एक दिन उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के बाद वह स्वर्ग में पहुँच गया, जो उसकी कल्पना से भी सुंदर था। गोपाल सोचने लगा, काश! मैं इस सुंदर स्थान पर पहले आ गया होता। बेकार में धरती पर रहकर काम करना पड़ता था। खैर, अब मैं आराम से सो जाऊँगा। वह यह सब सोच ही रहा था कि एक देवदूत उसके पास आया और हीरे-जवाहरात जड़े बिस्तर की ओर इशारा करते हुए बोला- आप इस पर आराम करें। आपको जो कुछ भी चाहिए होगा,मिल जाएगा। यह सुनकर वह बहुत खुश हुआ। अब वह दिन-रात खूब सोता रहता और खाता रहता था । कुछ दिन इसी तरह चलता रहा। लेकिन अब वह उकताने लगा था। उसे न दिन में चैन था न रात में नींद। जैसे ही वह बिस्तर से उठने लगता दास-दासी उसे रोक देते। इस तरह कई महीने बीत गए। उसको आराम की ज़िंदगी बोझ लगने लगी। एक दिन वह देवदूत के पास गया और उससे बोला- मैं जो कुछ करना चाहता था, वह सब करके देख चुका हूँ । अब तो मुझे नींद भी नहीं आती। मैं कुछ काम करना चाहता हूँ । क्या मुझे कुछ काम मिलेगा? देवदूत ने कहा आपको यहाँ आराम करने के लिए लाया गया है। यही तो आपके जीवन का सपना था। माफ कीजिए, मैं आपको कोई काम नहीं दे सकता। उस व्यक्ति ने कहा-अजीब बात है। मैं इस ज़िंदगी से परेशान हो चुका हूँ । मैं इस तरह अपना वक़्त नहीं गुजार सकता। इससे अच्छा तो आप मुझे नरक में भेज दीजिए।

देवदूत ने धीमे स्वर में कहा- आपको क्या लगता है आप कहाँ हैं? स्वर्ग में या नर्क में? मैं कुछ समझा नहीं-व्यक्ति ने कहा। देवदूत बोला- असली स्वर्ग वहीं होता है, जहाँ मनुष्य दिन-रात मेहनत करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता है। उनके साथ आनंद के पल बिताता है और जो कुछ मेहनत से मिलता है, उसी में खुश रहता है। लेकिन आपने कभी ऐसा नहीं किया। आप तो हमेशा आराम करने की ही सोचते रहे। जब आप धरती पर थे तब आराम करना चाहते थे। अब आपको आराम मिल रहा है, तो काम करना चाहते हैं । व्यक्ति बोला- शायद अब मुझे समझ आ गया है कि मनुष्य को काम के समय काम और आराम के समय आराम करना चाहिए। दोनों में से एक भी चीज ज्यादा हो जाए, तो जीवन में नीरसता आ जाती है। सच है, मेरे जैसे आलसी व्यक्तियों के लिए तो एक दिन स्वर्ग भी नरक बन जाता है।

- आद्या

हम आलसी तो नहीं हैं, पर हम संस्थापना दिवस के लिए अपनी ऊर्जा बचा रहे हैं !

आलसियों का आश्रम : हिंदी व्यंग्य-कथा

एक बार एक राज्य में बहुत सारे लोग आलसी हो गए। उन्होंने सारा कामधाम करना छोड़ दिया। यहाँ तक कि अपने लिए खाना बनाना भी छोड़ दिया और खाने के लिए दूसरों पर निर्भर रहने लगे। ज्यादातर समय वे लेटे रहते या सोते रहते।

खाने की समस्या का निराकरण जरूरी था क्योंकि इन आलसियों को खिलाने में लोग आनाकानी करने लगे। एक दिन सभी आलसियों ने राजा से माँग की कि सभी आलसियों के लिए एक आश्रम बनवाना चाहिए और उनके खाने की व्यवस्था करनी चाहिए। राजा नेक और दयालु होने के साथ -साथ बुद्धिमान था। उसने कुछ सोचकर मंत्री को एक आश्रम बनाने का आदेश दिया। आश्रम के तैयार होने पर सभी आलसी वहाँ जाकर खाने और सोने लगे।

एक दिन राजा अपने मंत्री और कुछ सिपाहियों के साथ वहाँ आया और उसने एक सिपाही से कहकर आश्रम में आग लगवा दी। आश्रम को जलता देख आलसियों में भगदड़ मच गई और सभी जान बचाने के लिए आश्रम से दूर भाग गए। जलते हुए आश्रम में दो आलसी अभी भी सोये हुए थे। एक को पीठ पर गर्मी महसूस हुई तो उसने पास ही में लेटे दूसरे आलसी से कहा, "मुझे पीठ पर गर्मी लग रही है, ज़रा देखो तो क्या माजरा है ?"तुम दूसरी करवट लेट जाओ", दूसरे आलसी ने बिना आँखे खोले ही उत्तर दिया।

यह देखकर राजा ने अपने मंत्री से कहा, "केवल ये दोनों ही सच्चे आलसी हैं। इन्हें भरपूर सोने और खाने को दिया जाए। शेष सारे कामचोर हैं। उन्हें डंडे मार- मार कर काम पर लगाया जाए।

-कृपा बुधराजा

फाउन्डर्स विशेष :यादों के पन्नों से

1978-79 - स्कैन्डी स्टॉल .

1961 मिस लिनेल एवं श्रीमती माधुरी जयाल

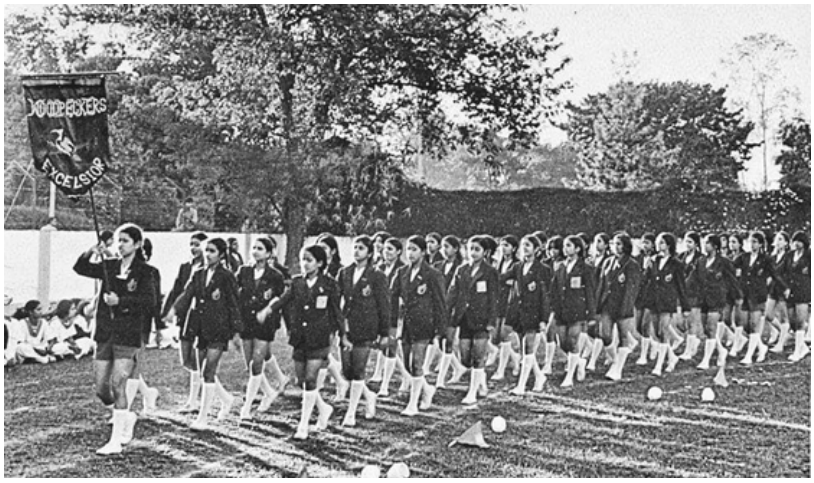

1978 मार्च पास्ट

1983 स्थापना दिवस समारोह

आदर्श वाक्य

आर्त शान्तिः फला विद्या

(श्रीमती विजय लक्ष्मी जुगरान का वैल्हमाइट्स के लिए संदेश)

विद्यालय का आदर्श वाक्य "आर्त शान्तिः फला विद्या"जिसका अभिप्राय है -दुखियों के दुख को पहचानना ,फिर अपने प्रयास से उन दुखियों के दुख को दूर करने की इच्छा शक्ति रखना और उसे क्रियान्वित करना। यही शिक्षा का परम लक्ष्य और सार्थक परिणाम होना चाहिए ।

आवासीय विद्यालयों की श्रेणी में केवल भारत में ही नहीं विश्व में भी अपनी अनूठी पहचान बनाने वाला वैल्हम विद्यालय अपने द्वारा निर्धारित सिद्धांत के लिए शाब्दिक अर्थ को ही प्रमाणित नहीं करता है बल्कि मानवता के स्तर पर उतरकर आत्मिक,आर्थिक तथा मानसिक स्तर पर भी इस आदर्श वाक्य का अक्षरशः व्यावहारिक रूप में पालन करता रहा है ।वैल्हम की शिक्षा ,प्रेरणा तथा पढ़ाया गया इंसानियत का पाठ हर क्षेत्र में हमेशा प्रत्येक छात्रा की परोपकार की भावना के लिए नींव की ईट माना जाता है। मैं अपनी सभी छात्राओं के इन मनोभावों को, भावनाओं को ,दूसरों के दुखों को समझने की शक्ति को, नमन करती हूँ । 'जियो और जीवन देने में सहायक बनो।' वैल्हम की सभी छात्राओं पर हमें गर्व है ।

असीम शुभकामनाओं सहित ..

पर्दे के पीछे

हम होंगे कामयाब एक दिन

ये कब ख़त्म होगा ?

माया का अवतार ?

ऑर्केस्ट्रा ?

मुट्ठी में वैल्हमाइट्स

अब बस भी करो रे भैया !

बात का बतंगड़

कमला दीदी के ऊपर अग्निशामक यंत्र गिरा !

नहीं नहीं! कमला दीदी के ऊपर गिरा है गमला..

यह सही नहीं है, कमला दीदी के ऊपर दूसरी दीदी गिर गई !

कुछ नहीं हुआ ! उनकी मदद करने वाली लड़की पर गिरा है कुछ !

न जाने कमला दीदी पर क्या गिरा !

स्मृति शेष
सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला'
(२१ फरवरी, १८९९-१५ अक्टूबर, १९६१)

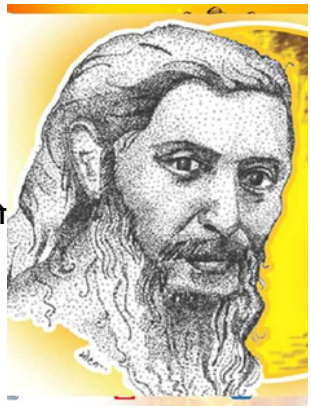

अनगढ़, अक्खड़, बेपरवाह, जीवन की झंझावतों से झाँकता हुआ आत्मा की अस्मिता का निष्पाप उजाला...
ऐसे थे महाप्राण निराला!
पर यही अक्खड़ कवि हृदय से कितना कोमल था, यह उनकी कविता 'मैं अकेला' से साफ़ झलकता है,

मैंअकेला; देखता हूँ, आ रही
मेरे दिवस की सांध्य वेला।

हिन्दी भाषा के महान कवि निराला को
उनकी पुण्य तिथि पर शत शत नमन !

चलते-चलते
गिटार बजाता हाथी ....

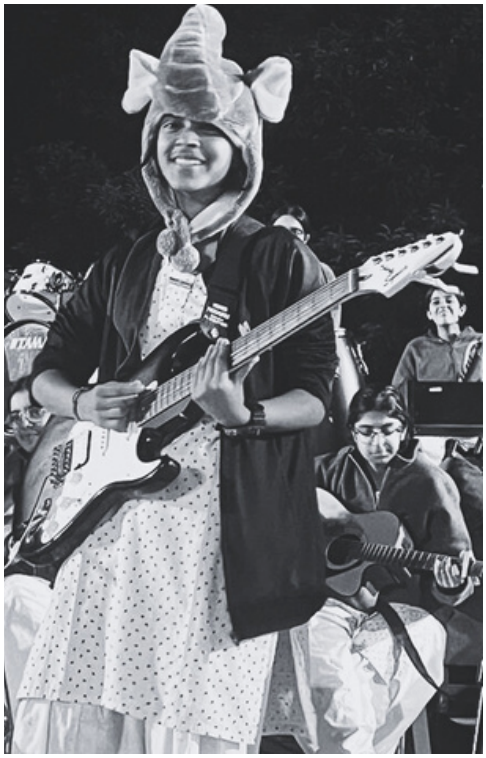

शब्दहार : दीप शब्द से बनें हैं अनेक शब्द

भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग दीपक है। विद्युत के आविष्कार से पूर्व प्रकाश के लिए दीपक ही मनुष्य का अवलम्ब था। प्रज्ज्वलित करना, आलोकित करना, दीपन शब्द के अर्थ हैं।सदियों से हम सियाराम के आगमन का उल्लास दीप जलाकर कर रहे हैं। दीपावली की रात्रि को दीपान्विता भी कहा गया है। दीपावली अर्थात "दीपों का महाउत्सव" हमारा प्रिय उत्सव है । दीपक की लौ को दीपांकुर भी कहते हैं और उस लौ की ऊष्मा को दीपाग्नि। संध्या का समय जब दीपक जलाने का समय हो जाए तो दीपकाल हो जाता है। देव की आरती उतारना दीपाराधन है। जो कांतिमान है उसे दीप्तिमान कहा गया है। श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम भी दीप्तिमान था। भारत के राष्ट्रीय पक्षी मोर का एक नाम दीप्तांग भी है। चंपा के वृक्ष को दीपपुष्प कहते हैं। घी, बत्ती आदि दीप का सामान रखने की डिबिया दीपदानी है। दीप छोटा हो तो वह दीपिका है।

दीपक एक राग भी है, एक ताल भी है और हिन्दी भाषा का एक अलंकार भी है। दीपक को ही दीया भी कहा गया है। दीया दिखाने का अर्थ किसी के सामने आलोक करना है। किसी चीज़ की बड़े परिश्रम से खोज की जाए तो वह दीया लेकर ढूँढना है।किसी को अपनी बुराई दिखाई न दे और संसार को उपदेश देता फिरे तो यह स्थिति दीया तले अंधेरा हो जाती है।अब भी संध्याकाल में 'दीयाबत्ती करना' कहते सुना जा सकता है। माचिस को दीयासलाई कहते हैं।

'जलो मगर दीपक की तरह' भी प्रेरणा से ओतप्रोत वाक्य है। 'अप्प दीपो भव' अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो वाक्य भी प्रेरणा का स्त्रोत है। संसार में कितने ही परिवर्तन क्यों न हो जायें ,देवों के समक्ष दीप सदैव दैदीप्यमान रहेंगे और इनका पुण्य प्रकाश सदा हमें प्रशस्त राह दिखाएगा।

क्षितिज परिवार की ओर से

सुख दुःख जो भी मिलें ,
करें हम उन्हें स्वीकार,
जीवन में विपदाओं से,
कभी न मानें हार।
करें सामना उनका अपनी,
क्षमता के अनुसार।
कोशिश करने वालों के ही,
खुलते हैं लक्ष्य के द्वार,
गिरते – पड़ते चढ़ जाती है,
छोटी चींटी भी दीवार।
लाँघ राह की बाधाओं को,
जो बढ़ती जलधार,
स्वागत करता उसका सागर
अपनी बाँह पसार।
लगा पेड़ की छाया जैसा
जिसको तपता थार,
खिल जाते उसके जीवन में,
सुख के कमल हजार।
पंख टूटने पर भी खुद को
समझें ना लाचार,
भरें हौसलों से उड़ान हम,
दूर क्षितिज के पार।

संपादक मंडल

मुख्य सम्पादिका - समृद्धि
सहायक संपादिक- भव्या संगल
प्रभारी शिक्षिका - डॉ ऋतु पाठक

- नविका जिंदल
- पावनी महिंद्रा
- वान्या अग्रवाल
- अरुणिमा

तमायरा सापरा
राशिका

फोटोग्राफी : श्रीम मिगलानी

विशेष आभार :
श्रीमती कुसुम दंडोना एवं समस्त हिन्दी विभाग